भारत एक है

लेखक का परिचय - यह एक सांस्कृतिक निबन्ध है। इसके लेखक श्री रामधारी सिंह दिनकर हैं। आप प्रगतिशील राष्ट्रीय कवि हैं। आपका जन्म मुंगेर जिले में सन् 1908 ई में हुआ। राज्यसभा के मनोनीत सदस्य था। आपको पद्मभूषण की उपाधि मिली थी।

आप की अन्य कृतियाँ - कुरुक्षेत्र, हुंकार, रेणुका, रश्मिरथी नीलकुसुम, उर्वशी, संस्कृति के चार अध्याय आदि।

सारांश -

'दिनकर' जी के अनुसार भारत देश की विविधताएँ जितना प्रत्यक्ष हैं, उसकी एकता भी उतनी ही प्रकट है। प्रस्तुत निबंध में यह प्रकट किया कि भारत एक है, अखंड है और अक्षुण्ण है।

1. प्राकृतिक दृष्टि से भारत वर्ष के तीन भाग हैं, एक भाग हिमालय तथा विंध्य के पर्वतों के बीच फैला हुआ है, दूसरा भाग दक्षिणी प्लेटो है जो विंध्य से कृष्णा नदी तक व्याप्त है। तीसरा भाग कृष्ण नदी से कुमारी अंतरीप तक विस्तृत है। इस तरह विभाजन से जलवायु में भिन्नता दीखता है।

2. जलवायु में भिन्नता के कारण विभिन्न प्रान्तों में भिन्न खाद्य-पदार्थों की पैदावार होती है, इससे खान-पान में फरक है।

जलवायु के अनुसार, मौसम के अनुसार विभिन्न राज्यों में लोगों का पहनाव अलग अलग हो, गर्मी ज्यादा रहनेवाले प्रान्तों में, सर्दी ज्यादा रहनेवाले प्रान्तों में पहनाव एक जैसा न हो, अगर कानून बना जाए भी पूरे भारतवासी एक तरह का पहनाव हो यह मुश्किल होता है।

4. अपने विचारों को एक दूसरे से बाँट लेने के लिए भाषा का माध्यम से ही होता है, मगर भारत में अलग-अलग प्रान्तों में अलग भाषाएँ बोली जाती है, भाषा में भी अनेकता दीखता है।

5. भारत देश में अनेक विभिन्नताएँ रहकर भी उसमें एकता छिपी हुई है। जैसे, भाषा, धर्म, प्रान्त, रीतिरिवाज आदि

अ) भाषा में छिपी एकता - भारत में विभिन्न भाषाएँ बोली जाती है। लेकिन राष्ट्रभाषा हिन्दी को अहिन्दी भाषा क्षेत्रों में प्रचार और प्रसार हो रहा है ताकि सब भारतवासी राष्ट्रभाषा सीखेंगे।

रामायण और महाभारत को लेकर भारत की लगभग सभी भाषाओं में अद्भुत एकता मिलती जैसे इन ग्रन्थों में रहनेवाले भाव सभी लोग एक ही तरह स्वीकार किये।

विविध भाषाओं की वर्णमाला के वर्णों जैसे

'अ' से लेकर 'ह' तक सभी भाषाओं में उच्चारण एक जैसा होता है, यह एकता का असली आधार है।

भाषा की दीवार टूटते ही कोई भेद न हो।

आ) धर्म-जाति-वर्ग में छिपी एकता - वास्तव में भिन्नता बाहरी है, किन्तु एकता हृदय की है, मस्तिष्क की है।

भारत में विभिन्न धर्म के लोग रहते हैं, लेकिन संस्कृति, विचार सब का एक है। उत्तर या दक्षिण चाहें, संस्कृति के मन्दिरों का निर्माण एक जैसा दीखता है।

किसी भी जाति-वर्ग के लोग हो, उनकी जीवन दृष्टि अथवा जीवन-दर्शन एक ही है।

देश की रक्षा के लिए सब भारतवासी भागीदार लेंगे, मुख्यत: प्रान्त, जाति, धर्म, वर्ग आदि न अपना कर सैनिक बनकर सेना बढ़ायेंगे। इससे बढ़कर कोई विषय न हो एक होकर लड़ेंगे।

इ - कानून में छिपी एकता - सभी भारतवासी पर कानून एक ही प्रकार चलता है। न्यायालयों में न्याय - शिक्षा आदि विषयों में सब पर एक ही है। आज भी संसद और शासन विधान एक हो गयी। यही हमारी एकता का महत्वपूर्ण प्रमाण है।

6. भारतीय जनता की एकता के असली आधार भारतीय दर्शन और साहित्य है। संस्कृत और प्राकृत में भारत का जो प्राचीन साहित्य लिखा गया था उसका प्रभाव सभी भारतीय भाषाओं की जड़ में काम कर रहा है। इस तरह विचारों की एकता जाति की सबसे बड़ी एकता होती है।

7. भारत की संस्कृति अति प्राचीन है, पूरे देश में एक ही देवी-देवताओं के मंदिर दिखाई देंगे, यहाँ पश्चिमी विचारों का प्रभाव भी है, लेकिन नवीन धाराओं के लोगों पर भी विरासत से यह संस्कृति मिल गये। यही देश की सच्ची एकता है।

उपसंहार — इन कारणों से भारतवासी अन्य देशों में जायेगा तो उसे भारतीय कहेंगे। कोई अजनबी विदेशी व्यक्ति भारत का भ्रमण किये तो झट से कहेंगे, यह कई देशों का समूह है। मगर बाह्य दृष्टि से ही विभिन्नताएँ दीखता - आन्तरिक दृष्टि से एकता दीखता।

प्रस्तुत निबंध में लेखक की राष्ट्रीयता स्पष्ट होती है, वे एकतावादी है।

1. कहते हैं पहले पहल अगस्त्य ऋषि ने विंध्याचल को पार करके दक्षिण के लोगों को अपना संदेश सुनाया था।

परिचय - यह वाक्य 'भारत एक है' नामक सांस्कृतिक निबंध से लिया गया है। इसके लेखक श्री रामधारी सिंह दिनकर हैं। आप हिन्दी काव्य के प्रगतिशील राष्ट्रीय कवि हैं।

संदर्भ - भारत के उत्तर और दक्षिण को एक करने के प्रयत्नों की चर्चा करते हुए निबंधकार यह बात बताते हैं।

व्याख्या - भारत के उत्तर और दक्षिण के बीच विंध्य का पहाड़ एक प्राकृतिक सीमा बना हुआ था। पुराणों के अनुसार वह अगस्त्य ऋषि थे, जो विंध्य पर्वत को सबसे पहले पार करके दक्षिण की तरफ गये थे। प्राकृतिक रूप से भारत दो होने पर भी उत्तर-दक्षिण सांस्कृतिक रूप से एक ही थे। हमारे पूर्वजों को भारत की एकता का ज्ञान और अनुभव था। अगस्त्य ऋषि के द्वारा यह साध्य हुआ कि दक्षिण भारत का अस्तित्व इन से हुआ।

हमारी एकता का दूसरा प्रमाण यह है कि उत्तर या दक्षिण चाहे जहाँ भी चले जाएँ आप को जगह-जगह पर एक ही संस्कृति के मंदिर दिखाई देंगे।

परिचय - As above

संदर्भ - देश की एकता को प्रमाणित करते हुए लेखक इस प्रकार कहते हैं।

व्याख्या - भारत में भिन्नता-एकता दोनों स्पष्ट और प्रत्यक्ष है। वास्तव में भिन्नता बाहरी है। किन्तु एकता हृदय की है। इसलिए सारे देश का धर्म और संस्कृति एक है। लोगों में आस्तिक हो या नास्तिक हो, मगर हिमालय से कुमारी अन्तरीप तक विश्वासवाली लोग रहते है। भारत भर में एक ही देवी - देवताओं के मंदिर दिखाई देंगे। यहाँ पश्चिमी विचारों का भी प्रभाव है, आधुनिक विचारधारा के लोग भी मिल जायेंगे, वे सभी एक ही प्रकार के होंगे। इस प्रकार भारतीयों के स्वभाव और जीवन दर्शन में एकता है।

नमूने प्रश्न

1. भारत में विविधता किन-किन बातों में दिखाई देती है? 5M
2. भारत की भाषा भेद की समस्या का परिचय दीजिए।
3. विविधता के भीतर भारत की एकता कैसे समायी हुई है? 5M
4. भारत की सबसे बड़ी विरासत क्या है? 5M
5. 'भारत एक है' पाठ का सारांश लिखिए। 12M

लेखक का परिचय – डॉ. प्रकाश भातल वंडे और रमण गंगा खेड़कर दोनों 'युनिसेफ' की परियोजना में काम करनेवाले रहे हैं। पहले अंग्रेजी में पुस्तक लिखी है। उनके अनुसार एड्स संक्रमणिक बीमारी के संदर्भ में प्रयास था।

लेखिका श्रीमती साधना ओर्प ने अंग्रेजी पुस्तक का " यौवन की दहलीज पर " शीर्षक से हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किया है।

प्रस्तावना – यह एक वैज्ञानिक निबंध है। यह बीसवीं सदी की लाइलाज है। यह बीमारी विशेष तेजी से भारत में फैली थी। इसका इतिहास, भारत में इसका फैलाव, इस से होने वाले लक्षण, बीमारी का संक्रमण, इस से फैली भ्रम / भ्रांतियों का परिचय प्रस्तुत निबन्ध में प्रस्ताव किया है।

एच-आई-वी / एड्स के इतिहास :– सन् 1981 में अमेरिका के लॉस एंजिल्स शहर के रोगियों में, डॉक्टरों को कुछ विशिष्ट लक्षण दिखाई दिए। वहाँ पर समलिंगी संभोग करने वाले कुछ युवा लोगों में एक विशिष्ट प्रकार का न्यूमोनिया और त्वचा का कर्क रोग या कैंसर देखा गया। यह रोग उन लोगों में पाया जाता था, जिन में शरीर की रोग प्रतिकार शक्ति कम थी, पर वे लोग बूढ़े थे। इस रोग को Gay related Immuno Deficiency Syndrome [GRID] नाम दिया गया।

वैसे ही लक्षण विषमलिंगी संभोग करनेवाले, शिराओं से मादक द्रवों का सेवन करनेवाले और हीमोफीलिक लोगों में भी दिखाई दिए। तब वैज्ञानिकों ने सोचा कि यह रोग प्रतिकारक

शक्ति कम करने वाले किसी विषाणु होता होगा और इस तरह इसका नाम बदलकर Acquired Immuno Deficiency Syndrome-[AIDS] रखा गया।

सन् 1983 में फ्रांस के वैज्ञानिक डॉ. ल्यूक मॉन्टाग्नियर और अमेरिका के रॉबर्ट गेलो इस रोग के विषाणु की खोज की। पहले इस के अलग-अलग नाम दिए। बाद में इसे Human Immuno Deficiency Virus [HIV] नाम दिया गया। इसका अर्थ, मानव शरीर की रोग प्रतिकारक शक्ति कम करने वाला विषाणु।

भारत में एच. आई. वी का फैलाव – हेच आई वी अप्रैल 1986 में सर्व प्रथम मद्रास की कुछ वेश्याओं में पाया गया। दुर्भा दोगान मुम्बई में एड्स का पहला भारतीय रोगी मिला। यह व्यक्ति हृदय रोग की शस्त्र क्रिया के लिए विदेश गया था। शस्त्र क्रिया के समय उसे जो रक्त दिया गया था, वह दुर्भाग्यवश HIV संक्रमित था, जिससे उसे एड्स हो गया था।

राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संस्था [NACO] के आंकड़ों के अनुसार भारत के करीब 38 लाख लोग HIV रोग से ग्रासित हैं। HIV मुख्यत: सेक्स से फैलने वाला एक रोग है। इसलिए कुछ गुप्त रोगों की तरह ही यह महामारी भी तीन अवस्थाओं से गुजरती है। पश्चिम भारत के प्रमुख शहरों में यह रोग अपनी तीसरी अवस्था तक पहुँच चुका है।

एड्स के लक्षण – 1. बिना वजह ही अचानक वजन का कम हो जाना, मूल वजन का 10 प्रतिशत तक वजन कम होना, हर माह 6 किलो से ज्यादा वजन कम होना, यह सब बिना किसी उचित कारण के, जैसे – कम आहार लेना, अधिक तनाव या अन्य बीमारियाँ, जिनकी वजह से भूख कम लगती है।

2. एक महीने से ज्यादा तक जुकाम का होना।
3. एक महीने से ज्यादा तक बुखार और खाँसी का चलना
4. कुश्शी नामक कवक के संक्रमण से मुँह में व्रण छालों के निर्माण होने से गर्म व मसालेदार भोजन खाने में तकलीफ होना।
5. त्वचा का कर्करोग और हरपीज का संक्रमण होना।

एड्स के विषाणु का फैलाव —

1. एच.आई.वी संक्रमित व्यक्ति का रक्त वीर्य या योनिस्राव, स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में प्रवेश करता है, तो वह भी एच.आई.वी संक्रमण से ग्रस्त हो जाता है।
2. एच आई वी ग्रसित व्यक्ति को इंजेक्शन देने के लिए जिस सुई का उपयोग किया, उसी सुई को बिना जीवाणु रहित किए अन्य स्वस्थ व्यक्ति को इंजेक्शन देने से भी संक्रमण की संभावना रहती है।
3. यह संक्रमण ग्रसित गर्भवती माता से यह संक्रमण बच्चे को भी हो जाता है।
4. शिराओं से मादक द्रव्यों का सेवन करनेवाले व्यक्तियों में एक ही सुई का उपयोग जब अनेक लोग करते हैं, तब इस से भी एच.आई.वी फैलने की संभावना बढ़ जाती है।
5. अन्य गुप्त रोगों से जननेंद्रियों पर होने वाले व्रण से इस विषाणु का शरीर में प्रवेश आसानी से हो जाता है, इसलिए गुप्त रोगों से ग्रसित व्यक्ति में एच आई वी संक्रमण की संभावना अधिक होती है।

एड्स के विषाणुओं का संक्रमण किस माध्यम से नहीं होता —

1. हाथ मिलाने से
2. एक साथ बैठने से या यात्रा करने से
3. खाँसने से या छींकने से, आँसुओं से।
4. आलिंगन करने से, चुम्बन से
5. एच आई वी बाधित व्यक्ति द्वारा उपयोग किए तालाब, शौचालय टेलीफोन का उपयोग करने से।
6. एच आई वी बाधित व्यक्ति द्वारा उपयोग किए गये बर्तन, कप, प्लेट

चादर या उसके पहने हुए कपड़े को इस्तेमाल करने से।

7. एक साथ खाना खाने से

8. मच्छरों या खटमलों के काटने से।

9. एच.आई.वी बाधित व्यक्ति की सेवा करने से

10. किसी भी प्रकार के अनजाने में हुए सम्पर्क से, जैसे बस/रेल में धक्का लगना, पीठ पर हाथ फेरना आदि

11. रक्तदान करने से।

उपसंहार — 1. एच.आई.वी/एड्स अमेरिका से अन्य देशों को फैला है

2. बाह्य आकर्षणों का परिणाम हमेशा बुरा ही होता है।

3. मनुष्य को हरतरह से निष्ठावान बनकर समाज में अच्छा नाम कमाना है।

4. ईश्वर के द्वार देर है, पर अंधेर नहीं, कम से कम अब भी आभास किया और कराया जा सकता है कि संक्रमण रोगों के गिरफ्त में न आये, जिससे लज्जाजनक जीवन बिताना पड़े।

नमूने प्रश्न

1. एच.आई.वी/एड्स के इतिहास पर प्रकाश डालिए। 5M
2. एच.आई.वी/एड्स भारत में कब और कितना फैला है?
3. एच आई वी/एड्स लक्षणों पर प्रकाश डालिए।
4. एच आई वी/एड्स के विषाणु कैसे फैलते हैं?
5. एच आई वी/एड्स के विषाणुओं का संक्रमण किस माध्यम से नहीं होता है?

संदर्भ सहित व्याख्या

1. इन रोगों के लिए समाज में नियमित और आवश्यक रूप से जागरूकता अभियान चलाने की आवश्यता है।

प्रसंग - यह उद्धरण के मूल लेखक डॉ. प्रकाश आतंर वंडे जी और डॉ. रमण गंगा खेडेकर द्वारा लिखित एच. आई. वी. । एड्स नामक पाठ से ली गई है। इसका अनुवाद श्रीमती साधना आर्य ने किया।

संदर्भ - बीसवी सदी में यह लाइलाज बीमारी है। इसके प्रति मुख्यत: नवयुवकों में जागरूकता लाना आवश्यक है।

व्याख्या - यह महामारी बीमारी बीसवी सदी में अमेरिका से आरम्भ हुई है। धीरे-धीरे हवा के झोंके की भाँति अन्य देशों में भी फैल गई है। इसका प्रमुख कारण है कि मनुष्य का मनसा, वाचा, कर्मणा कर्मनिष्ठ, सत्य निष्ठ धर्म निष्ठ होना है। बाह्य प्रलोभनों की ओर बेकार में आकर्षित होने का दुष्परिणाम यही होता है। इस सत्य को जानने के प्रति जन-सामान्य ही नही अपितु सभी वर्गों के लोगों में जागरूकता लाना आवश्यक। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने आप इस तरह निष्ठा पूर्वक रहेगा तो किसी भी सरकार की रोकथाम के लिए करोडों रुपए व्यर्थ खर्च करने की आवश्यकता नहीं है।

टिप्पणी - जन-कल्याण में योगदान देना है न कि समाज को
पतन की ओर नही

आज के नवयुवक कल के उज्जवल भविष्य रूपी इमारत है अत: उन्हें शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक दृष्टि से स्वच्छ और स्वस्थ रहना है।

परिभाषा – संधि संस्कृत के सम् + धि से बना है यह इसका शाब्दिक अर्थ है मेल या योग। सन्धि केवल वर्णों या अक्षरों का मेल होता है, जिसमें दो अक्षर मिलकर तीसरे अक्षर में बदल जाते हैं। इस प्रकार दो वर्णों के मेल से होनेवाले परिवर्तन या विकार ही संधि कहते हैं।

सन्धि के प्रकार – यह तीन प्रकार है –

1. स्वर सन्धि
2. व्यंजन सन्धि
3. विसर्ग सन्धि

1. स्वर सन्धि – दो स्वरों के मेल से याने स्वर का स्वर के साथ मेल होने पर, होनेवाले परिवर्तन या विकार को स्वर संधि कहते हैं।

प्रकार – इसके पाँच भेद हैं –

1. दीर्घ सन्धि
2. गुण सन्धि
3. वृद्धि सन्धि
4. यण् सन्धि
5. अयादि सन्धि

1. दीर्घ सन्धि – स्वरों में जो ह्रस्व स्वर होते हैं तो जैसे अ, इ, उ इसके साथ ह्रस्व या दीर्घ का वही के मेल होने से दीर्घ आता है –

अ + अ, आ + अ, अ + आ, आ + आ } आ

मत + अनुसार = मतानुसार
गीता + अंजलि = गीतांजलि
हिम + आलय = हिमालय
विद्या + आलय - विद्यालय

इ + इ
ई + इ
ई + ई
इ + ई } ई

रवि + इन्द्र - रवीन्द्र
मही + इन्द्र - महीन्द्र
कवि + ईश - कवीश

उ + उ
ऊ + उ
ऊ + ऊ
उ + ऊ } ऊ

भानु + उदय - भानूदय
स्वयंभू + उदय - स्वयंभूदय
भू + ऊर्ध्व - भूर्ध्व
लघु + ऊर्मि - लघूर्मि

ऋ + ऋ - ॠ - पितॄण [पितृ + ऋण]

2. गुण सन्धि - किसी सजाति स्वर का अन्य सजाति स्वर का मेल से जो विकार होता है उसे गुण सन्धि कहते है -

अ + इ
अ + ई
आ + इ
आ + ई } ए

नर + इन्द्र - नरेन्द्र
देव + ईश - देवेश
महा + इन्द्र - महेन्द्र
महा + ईश - महेश

अ + उ
अ + ऊ
आ + उ
आ + ऊ } ओ

चन्द्र + उदय = चन्द्रोदय
महा + उत्सव - महोत्सव

अ + ऋ - अर् - देव + ऋषि - देवर्षि
आ + ऋ - अर् - महा + ऋषि - महर्षि

3. वृद्धि संधि - किसी सजाति स्वर, विजाति स्वर से मेल हो, जो विकार होता है उसे वृद्धि सन्धि कहते है।

अ + ए
अ + ऐ
आ + ए
आ + ऐ } ऐ

एक + एक - एकैक
सदा + एव - सदैव
मत + ऐक्य - मतैक्य
महा + ऐश्वर्य - महैश्वर्य

अ + ओ
अ + औ
आ + ओ
आ + औ } औ

परम + औषध - परमौषध
सुन्दर + ओदन - सुन्दरौदन

यण् सन्धि - जहाँ स्वरों का मेल 'यण' में होता है, जैसे परिवर्तन उसे यण सन्धि कहते हैं।

इ+अ - य - यदि + अपि - यद्यपि   इ+ए - ये - प्रति+एक
इ+आ - या - अति + आवश्यक   इ+ऐ - यै -
इ+उ - यु - प्रति + उपकार   अति + ऐश्वर्य
इ+ऊ - यू - अति + ऊष्म

उ+अ - व - अनु + अय -   उ+ए - वे - अनु+एषण
उ+आ - वा   सु + आगत.   उ+ऐ - वै
उ+इ - वि   अनु + इत -
उ+ई - वी

ऋ+अ - र - पितृ + अर्थ - पित्रर्थ
ऋ+आ - रा   पितृ + आज्ञा - पित्राज्ञा

5 अयादि संधि - स्वरों का मेल जब अय, आय, अव अय, आय, अव आदि रूपों में विकार होता है उसे अयादि सन्धि कहते हैं।

ए + अ - अय - ने + अन - नयन
ऐ + अ - आय - नै + अक - नायक
ओ + अ - अव - पो + अन - पवन
औ + अ - आव - पौ + अक - पावक
औ+ इ - आवि - नौ + इक - नाविक
औ + उ - आवु - भौ + उक - भावुक

व्यंजन सन्धि

परिभाषा - व्यंजन वर्ण के बाद स्वर या व्यंजन वर्ण के आने से उस मेल के चलते जो परिवर्तन या विकार होता है उसे व्यंजन संधि कहते हैं। ये परिवर्तन कुछ निश्चित नियमों के अनुसार होते हैं -

पहला नियम - क, च, ट, त, प वर्ण के बाद कोई स्वर या य, र, ल, व में से कोई वर्ण आये तो उनके मेल के फल स्वरूप व्यंजन वर्ण अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण में बदल जाता है।

क, च, ट, त, प + कोई स्वर / य र ल व = उसी वर्ग का तीसरा वर्ण

उदा - वाक् + ईश - वागीश
अच् + अंत - अजन्त
षट् + आनन - षडानन

दूसरा नियम - क, च, ट, त, प, के बाद उन्हीं वर्गों का तीसरा या चौथा वर्ण आये तो पहला वर्ण - तीसरे वर्ण में बदल जाता है।

उदा - वाक् + जाल - वाग्जाल
उत् + धाटन - उद्घाटन

तीसरा नियम - किसी वर्ग के पहले वर्ण के बाद न या म व्यंजन आये तो वह पहला वर्ण (अर्थात् क, च, ट, त, प) अपने वर्ग के पाँचवी वर्ण में बदल जाता है।

जैसे - जगत् + नाथ - जगन्नाथ
तत् + मय - तन्मय

चौथा नियम - म के बाद य, र, ल, व, श, ष, स, ह वर्ण के आने से 'म' अनुस्वार बन जाता है -

सम् + विधान - संविधान, सम् + हार - संहार

...वाँ नियम - यदि स्वर के बाद 'छ' वर्ण आये तो वह 'च्छ' हो जाता है -

स्व + छंद - स्वच्छन्द

अनु + छेद - अनुच्छेद

विसर्ग सन्धि

परिभाषा - विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन मिलने से होने वाला विकार या परिवर्तन विसर्ग संधि कहलाता है।

पहला नियम: यदि विसर्ग के पहले इ या उ हो और विसर्ग के आगे 'र' हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है

उदा - नि + रस - नीरस

नि: + रोग - नीरोग

दूसरा नियम - विसर्ग के बाद च, छ, ट, ठ, त, थ, स आने पर विसर्ग क्रमश: श ष और स् बन जाता है।

उदा - दु: + साहस - दुस्साहस

नि: + तार - निस्तार

तृतीय नियम - विसर्ग के पूर्व इ या उ हो और विसर्ग के पश्चात् क, ख, प या फ रहे तो विसर्ग 'ष' में बदल जाता है

उदा: नि: + फल - निष्फल

दु: + कार - दुष्कार

चौथा नियम - विसर्ग से पहले अ, आ को छोड़कर कोई स्वर हो और विसर्ग के बाद कोई भी स्वर हो तो विसर्ग 'र' में बदल जाता है -

नि: + आहार - निराहार

दु: + आत्मा - दुरात्मा

1. लिपिक (क्लर्क) पद के लिए आवेदन पत्र भेजिए।

प्रेषक

तिरुपति
ता. 25-06-2021

15/12-2-221,
गान्धी रोड,
तिरुपति

सेवा में
प्रधान आचार्य,
श्री वेंकटेश्वर ट्यूटोरियल कॉलेज,
तिरुपति

महोदय

विषय : लिपिक पद के लिए आवेदन-पत्र।

सन्दर्भ : दैनिक ईनाडु 20-06-2021 के प्रकाशित विज्ञापन।

20 जून 2021 के दैनिक ईनाडु से पता चला कि आपके यहाँ एक लिपिक पद रिक्त है इस सिलसिले में अपना आवेदन पत्र आपके सम्मुख में भेज रहा हूँ। मेरी योग्यताएँ और अनुभव निम्नलिखित प्रकार हैं -

योग्यता :

अ) बी. एस. सी [कंप्यूटर] में प्रथम श्रेणी [एस. वी. विश्वविद्यालय]

आ) टाईप राइटिंग हयर उत्तीर्ण

इ) संकेत लिपि में गति 'एक मिनट में सौ शब्द'

अनुभव - लिपिक, ममता ट्रान्सपोर्ट मदनपल्ली एकवर्ष

मैं तिरुपति के निवासी हूँ। आज तक मैं ममता ट्रान्सपोर्ट में काम करती हूँ, लेकिन वह तिरुपति से मदनपल्ली जाने से अधिक समय लगेगा। मेरे परिवार का संरक्षण करना कर्तव्य है, आप का विज्ञापन देखने से मुझे कुछ आशा मिली कि स्वस्थल में रहकर नौकरी करते हुए अपने परिवार संभाल सकूँ। विश्वास है कि आप मेरे आवेदन पत्र पर सहानुभूति पूर्वक विचार करेंगे।

सधन्यवाद

भवदीय

रा. सुरेश

२. हिन्दी प्राध्यापक की नौकरी के लिए प्रधानाचार्य के नाम पत्र

पुंगनूर,

२३-०६-२०२१.

प्रेषक :

सेवा में

प्रधान आचार्य,

श्री ज्ञानांबिका डीग्री कॉलेज,

मदनपल्ली।

विषय : हिन्दी प्राध्यापक पद के लिए आवेदन पत्र।

संदर्भ: आप का विज्ञापन, दिनांक २०-०६-२०२१

मान्यवर महोदय,

आपके उक्त विज्ञापन के उत्तर मे मैं अपना आवेदन पत्र आप की सेवा में प्रस्तुत करने हेतु भेज रही हूँ। मेरे संबंध के सारे विवरण संलग्न हैं —

शैक्षिक योग्यताएँ :

अ) एम.ए. [दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, चेन्नै]

आ) राष्ट्रभाषा प्रवीण ["]

इ) एम.फिल [श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, तिरुपति]

अनुभव : मैं स्थानीय हिन्दी प्रचारक विद्यालय में पाँच वर्ष से भाषा-शिक्षण प्राध्यापिका का काम करती हूँ। आवश्यकता के अनुसार कंप्यूटर को भी पढ़ा रही हूँ।

अन्य : उत्तम स्वास्थ्य तथा हसमुख की प्रवृत्ति और छात्रों को समझाने में अपना परिपूर्ण योगदान समर्पित करने की प्रवृत्ति।

भवदीय

××

संलग्न :

आवेदनपत्र

प्रमाणपत्रों की नकलें सहित

नमूने प्रश्न :

1. बुकस्टाल के मैनेजर पद के लिए आवेदन पत्र लिखिए।
2. अनुवाद की नौकरी के लिए प्रबन्धक के नाम पत्र लिखिए।

पत्र लेखन [शिकायती पत्र]

स्कूटर चोरी होने पर थाना अधिकारी को पत्र लिखिए।

मदनपल्ली
दि- 26-06-2020

प्रेषक

सेवा में
थाना अधिकारी,
थाना तिलक गार्डन,
मदनपल्ली

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं आज एक शपथ-पत्र बनवाने के लिए जिला न्यायालय गया था। न्यायालय के मुख्य द्वार के पास मैं ने अपना स्कूटर खड़ा कर दिया था।

जब मैं शपथ-पत्र बनवाकर न्यायालय के मुख्य द्वार पर आया तो मेरा स्कूटर गायब था। मैंने आस-पास लोगों से काफी पूछताछ की, किन्तु स्कूटर का पता नहीं चला। मेरे वजाज स्कूटर का रंग नीला है और उसका नंबर DL 16A 2380 है।

आप से निवेदन है कि इस सम्बन्ध में कार्यवाही करने की कृपा करें।

धन्यवाद

प्रार्थी
---

② आपके नगर में सफाई सुचारू रूप से नहीं हो रहा है। बीमारियाँ फैलने की आशंका है। इस कारण को बताते हुए स्वास्थ्य अधिकारी को शिकायती पत्र लिखिए। (Page 5)

प्रेषक
- - - -
- - - -
- - - -

मदनपल्ली,
दि - - - - - - -

सेवा में
स्वास्थ्य अधिकारी,
मदनपल्ली नगरपालिका
मदनपल्ली

मान्य महोदय

सादर प्रणाम। आपकी सेवा में नम्र निवेदन है कि कुछ दिनों से हमारे कॉलनी में सफाई ठीक ढंग से नहीं हो रही है। सड़कों पर कूड़ा-कचरा जमा हुआ है। नालों का पानी सड़कों पर बहता है। सफाई की व्यवस्था नहीं है, इसलिए मच्छर खूब बढ़ गये हैं। कई लोग मलेरिया के शिकार बनते जा रहे हैं। इसलिए मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि सफाई कराने के आवश्यक कदम उठाएँ।

भवदीय,
xxxxx